जनसंख्या, पर्यावरण व विकास पर एक नारीवादी नज़रिया

कमला भसीन

पिछले कई सालों से बढ़ती हुई आबादी की बहुत बात होती है। बार-बार यही कहा जाता है कि बढ़ती हुई आबादी के लिए जीने के साधन जुटा पाना, सबको दाना-पानी, सेहत, शिक्षा की सहूलियतें दे पाना असंभव होगा।

आजकल जनसंख्या की बात को विकास और खास तौर से पर्यावरण से जोड़ा जा रहा है। हर जगह, ज़ोर शोर से यह कहा जा रहा है कि जनसंख्या से पर्यावरण और विकास को हानि हो रही है। बढ़ती हुई आबादी की वजह से जंगल कट रहे हैं, धरती पर बोझ बढ़ रहा है।

विकास, पर्यावरण और जनसंख्या के संबंधों को समझना ज़रूरी है, और यह देखना भी ज़रूरी है कि इन सब बातों का ग़रीबों और औरतों पर क्या असर पड़ रहा है।

क्या वाकई गरीब दोषी हैं?

सब से पहले तो हम यह देखें और समझे कि बढ़ती हुई आबादी की ज़्यादा बात कौन करते हैं? जनसंख्या का डर अमीर देशों और ग़रीब देशों के अमीर और मध्यम परिवारों को ही ज़्यादा है। वही इसका हंगामा मचाए हुए हैं। वे ही अखबारों, फ़िल्मों, इश्तहारों, नारों के माध्यम से जनसंख्या से होने वाली हानियों की बात करते हैं। उन्हें अपने बच्चे तो बच्चे लगते हैं, ग़रीबों के बच्चे "बोझ", "मुसीबत", "जनसंख्या" और "आबादी" लगते हैं। ग़रीबों की बढ़ती तादाद उन्हें खतरनाक लगती है। पश्चिमी देशों को न जाने कब से चीन की आबादी का डर खाए जा रहा है।

आज अमीर देश और ग़रीब देशों के अमीर लोग यह झूठ दोहराने में लगे हैं कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के ज़िम्मेदार ग़रीब हैं, विकास के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा भी ग़रीब हैं। ग़रीब देशों और ग़रीब लोगों को दोषी ठहराया जा रहा है। जो खुद शोषित हैं, जिन्हें आज की आर्थिक व्यवस्था ने ग़रीबी रेखा के कहीं नीचे जा पटका है—उन्हीं को दोषी कहा जा रहा है, क्योंकि उन्हीं के बच्चे ज्यादा होते हैं। और ग़रीबों से भी बड़ा दोषी कौन? औरतें। ग़रीब औरतों को सबसे ज्यादा हिकारत, घृणा की नजर से देखा जा रहा है। उन्हें ही देश की समस्याओं के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जा रहा है। सारे परिवार नियोजन कार्यक्रम ग़रीब औरतों को शिकार बनाए हुए हैं, उन्हीं पर सब का वार है। ग़रीब औरत को देश, पर्यावरण और विकास का दुश्मन कहा जा रहा है। उस पर एक और लांछन, एक और बोझ।

अगर हम ग़रीबी और पर्यावरण की समस्या से निपटना चाहते हैं तो हमें इनके कारणों को ठीक से समझना होगा। आज तो साज़िश है असल कारणों को दबाने और भुलाने की। अमीर देश और अमीर लोग ग़रीबों को इसलिए दोषी ठहरा रहे हैं क्योंकि वे अपने गिरेबान में नहीं झांकना चाहते। वे अपने उपभोग को कम नहीं करना चाहते और न ही वे पर्यावरण प्रदूषण और बढ़ती हुई ग़रीबी के लिए अपने आपको ज़िम्मेदार मानना चाहते हैं। चूंकि सारे प्रचार माध्यम अमीरों के हाथ में है, नीतियां और योजनाएं बनाने वाले उनके अपने हैं, वे ग़रीबों के खिलाफ़ अफ़वाहें फैलाते रहते हैं, झूठ का सच, सच का झूठ करते रहते हैं। इस साज़िश का पर्दाफ़ाश करना ज़रूरी है और पर्यावरण और ग़रीबी पर गहराई, ठंडे दिमाग़ और ईमानदारी से सोचना ज़रूरी है।

धरती पर ज्यादा बोझ किस का है? अमीरों का या ग़रीबों का

यह बात सरासर ग़लत है कि पर्यावरण प्रदूषण के ज़िम्मेदार ग़रीब लोग हैं, क्योंकि—

1. जिन रसायनों, गैसों आदि से पर्यावरण अधिक प्रदूषित हो रहा है उनका प्रयोग ग़रीब बहुत कम करते हैं। कारों की संख्या जिस तेज़ी से बढ़ रही है उसकी कोई बात नहीं करता। एक कार, कई ग़रीबों से ज्यादा पर्यावरण प्रदूषित करती है। रेफ्रीजरेटरों, एअर कंडीशनरों से निकलने वाली गैसें सिर्फ़ अमीरों के कारण निकल रही हैं। नदियों, समुद्रों, तालाबों का पानी जो फ़ैक्टरियां गंदा कर रही हैं वो फ़ैक्टरियां ग़रीबों की नहीं है।
2. ग़रीब अपने जीने के लिए बहुत कम साधनों का उपयोग करते हैं। स्टील, सीमेंट, पैट्रोल, प्लास्टिक, बड़े बंगले, सैकड़ों कपड़े कुछ भी वो काम में नहीं लेते। दुनिया के अमीर देशों में रहने वाले 20 प्रतिशत लोग दुनिया के 80 प्रतिशत संसाधन हड़प रहे हैं। उनका अधिक भार है पृथ्वी पर या ग़रीबों का?
3. अमीर देशों में शुरू किए गए उत्पादन के तरीके, उनकी लगाई फैक्टरियां, उनके खाने, पहनने के तरीके, उनका उपभोक्तावाद पर्यावरण प्रदूषण का सबसे बड़ा ज़िम्मेदार है।

हमें यह समझना होगा कि जनसंख्या पर्यावरण समस्या का कारण नहीं है। ये दोनों ही समस्याएं उस आर्थिक और राजनैतिक ढांचे की उपज हैं जिसने प्राकृतिक संसाधनों का पूरी तरह से दुरुपयोग किया है और हर जगह आर्थिक विषमताएं बढ़ाई हैं।

टिकाऊ विकास ज़रूरी

अगर बीमारी का ठीक विश्लेषण नहीं होगा तो इलाज कभी ठीक नही हो सकता। यही वजह है कि बीस-तीस साल से जनसंख्या रोकने के लिए अरबों रुपये खर्च करने के बाद भी समस्या हल नहीं हो रही। और न ही इस तरह यह समस्या हल हो सकती है।

1974 में बुकारेस्ट में हुए विश्व जनसंख्या सम्मेलन में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कहा था कि **विकास सबसे अच्छा गर्भ निरोधक है।** बहुत सच्चा और सही नारा था यह, पर आज विकास की बात न करके गर्भ निरोधकों को ही विकास माना जा रहा है। परिणाम यह है कि न विकास हो रहा है और न जनसंख्या कम हो रही है।

हम अगर अमीर देशों के इतिहास में जाएं या मैं एक मध्यम वर्ग की औरत अपने ही परिवार के इतिहास को देखूं तो पाऊंगी कि परिवार की संख्या हमारे जीवन स्तर और उत्पादन के तरीके के साथ जुड़ी है। खेतीहर घरों में बच्चे ज्यादा होते रहे हैं

यूरोपवासियों ने पांच सौ साल पहले अमरीका पर कब्ज़ा किया और वहां के मूल निवासियों को लगभग खत्म कर दिया। उन का सब कुछ हथिया लिया, बिना कोई मुआवज़ा दिए। अफ्रीका, एशिया, दक्षिण अमरीका में उपनिवेश बनाए गए। वहां की ज़मीन, खनिजों, तेल को कब्ज़े में किया और धरती की कमर तोड़ दी। उपभोग के लिए, मुनाफे के लिए धरती को काटा, पीटा, लूटा। जंगल खत्म कर दिए। पर्यावरण की कोई परवाह नहीं की, संसाधनों के मूल मालिकों की अवहेलना की।

पिछले बीस सालों में भारत में अमीरों और ग़रीबों में फ़र्क बढ़ा है, कम नहीं हुआ। अमीर और ग़रीब देशों के बीच भी विषमतायें बढ़ी हैं। यह जनसंख्या बढ़ने की वजह से नहीं है बल्कि शोषण की वजह से है, विकास की ग़लत धारणाओं और योजनाओं की वजह से है।

और होते हैं। मज़दूरों के बच्चे ज्यादा होते हैं—एक तो इसलिए क्योंकि वहां हर व्यक्ति की कीमत है, हरेक मेहनत करके खाता है। वह बोझ नहीं है। **ग़रीब का बच्चा 25 साल तक बैठ कर उपभोग नहीं करता।** वह तो चार पांच साल की उम्र से ही कमाता है। दूसरा कारण है किसानों और मज़दूरों को स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त नहीं होतीं। उनके बच्चे बहुत मरते हैं। परिवार के सदस्य ही उनकी सुरक्षा और पूंजी हैं।

इन हालातों को बदले बिना ग़रीबों पर परिवार नियोजन लादना न उचित है, न संभव। जबर्दस्ती परिवार नियोजन लादने से सरकार और ग़रीबों के बीच की दूरी बढ़ेगी। जनता को साथी, सहयोगी मान कर चलना ही ठीक है। उन्हें दुश्मन, दोषी, बेवकूफ़ कहना और समझना न अमीरों के हित में है, न देश के और न ही प्रजातंत्र में यह उचित है।

यही कहानी हर अमीर देश की है। शहरीकरण, औद्योगीकरण, शिक्षा, स्वास्थ सेवाएं आने के साथ छोटे परिवार आए। परिवार नियोजन अपने आप अपनाया गया। उसे थोपने की ज़रूरत नहीं पड़ी। यही सब जब ग़रीबों के साथ होगा तो उनके परिवार भी नियोजित होने लग जाएंगे।

इस सब के साथ-साथ और भी कदम उठाए जाएं जिनसे लोगों की शिक्षा व स्वास्थ्य का स्तर बेहतर हो। औरतों और मर्दों को अच्छे, सुरक्षित गर्भ निरोधक प्राप्त हों ताकि वे अपनी मर्जी से अपने परिवार को सुनियोजित कर सकें। परिवार नियोजन की ज़िम्मेदारी स्त्री और पुरुष दोनों को उठानी होगी। इसके लिए ज़रूरी है महिलाओं की स्थिति सुधारना, उन्हें सशक्त बनाना। एक समग्र सोच और समग्र विकास के बिना परिवार नियोजन की बात करना ग़रीब और स्त्री-द्रोही है और इसीलिए ग़लत है। □

पर्यावरण और महिला आंदोलनों से जुड़े अधिकतर लोगों का मानना है कि पर्यावरण और जनसंख्या के सवालों से निपटने के लिए:—

— आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को कम करना होगा।

— मुनाफ़े के लिए प्रकृति का जो विनाश किया जा रहा है उसे रोकना होगा।

— प्राकृतिक संसाधनों के लिए आदिवासियों और ग्रामवासियों को ज़िम्मेदारी सौंपनी होगी। देशी और विदेशी मुनाफ़ाखोर संसाधनों को नष्ट ही कर सकते हैं।

— संसाधनों पर मुट्ठी भर लोगों और देशों के आधिपत्य को खत्म करना होगा और उपभोग को कम करना होगा।

— टिकाऊ विकास की बात करनी होगी जिसमें प्रकृति और मानव मिल कर रहें। हरेक की भागीदारी हो और स्त्री-पुरुष में भी विषमताएं न हों। ऐसा विकास हो जिसमें जनसाधारण की ज़रूरतें पूरी हों, साधनों व सत्ता का विकेंद्रीकरण हो।